॥ ॐ ॥ श्रीः ॥

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, केंद्र-नागपुर

दूरभाष : ४२००६
पत्रव्यवहार का पता
मा. स. गोळवलकर
डा. हेडगेवार भवन
नागपुर २

सरसंघचालक : मा. स. गोळवलकर   सरकार्यवाह : म. द. देवरस

पत्र क्र. ....   दिनांक   तिथि ....

2-4-73   1

सर्व स्वयंसेवक बंधुओं को —

गत कुछ मास से शरीर का स्वास्थ्य दुर्बल सा हो रहा है। डॉक्टर बंधु निराश हो गये हैं। सबके मनमें एक ही विचार आता प्रतीत होता है कि यह शरीर अब अल्पावधि का ही साथी है।

गत अनेक वर्षों की व्यवस्था के कारण यह विचार प्रस्तुत होना आता है। संघकार्य अपने संविधान के अनुसार सुचारु रूपसे चलेगा ही। उसी संविधान के अनुसार नूतन सरसंघचालक की योजना करने का यह प्रश्न है। अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल के जिन सदस्यों से मैं विचार विनिमय कर सका वे सब पुराने, दीर्घकाल के अनुभवी, मंजे हुए कार्यकर्ता हैं और भिन्न भिन्न प्रान्तों के संघचालक पद पर रहकर कार्य में संलग्न हैं। सबका मत होने पर उनका सहमतिपूर्वक निर्णय प्रकट करने का मेरा उत्तरदायित्व - सरसंघचालक होने से - आता है।

उस दायित्व को पूरा करने हेतु मैं यह निर्णय प्रकट कर रहा हूँ कि मेरे शरीर के शान्त होने के पश्चात् - सरसंघचालक पद का भार सब कार्योंहेतु श्री मधुकर दत्तात्रेय उपाख्य बालासाहेब देवरस ग्रहण करेंगे।

अपने कार्य की स्नेहपूर्ण एकात्मता की पद्धति, आत्मनिरपेक्षता, ध्येयनिष्ठा आदि विशेषताओं को ध्यान में रखकर सब छोटे बड़े स्वयंसेवक बंधु अपने परम पूज्य सरसंघचालक जी के मार्गदर्शन में संघकार्य की पूर्ति हेतु कायावाचामनसा जुटे रहेंगे और कार्य सिद्धि शीघ्र प्राप्त कर सकेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

सब बंधुओं को सादर नमस्कार। इति शम् —

मा. स. गोळवलकर

॥ ॐ ॥

॥ श्रीः ॥

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, केंद्र-नागपुर

दूरभाष : ४२९०६
पत्रव्यवहार का पता
मा. स. गोळवलकर
डा. हेडगेवार भवन
नागपुर २

सरसंघचालक : मा. स. गोळवलकर   सरकार्यवाह : म. द. देवरस

पत्र क.   दिनांक २-४-७३   तिथि ....

आपका कार्य राष्ट्र पूजन का है, धर्म पूजन का है — व्यक्ति पूजन को उसमें स्थान नहीं है। मेरा शरीर अल्पकाल का साथी रहा है ऐसा डॉक्टर बंधुओं का अनुमान प्रतीत होता है। शरीर नश्वर तो है ही, वह छूट जायेगा। उसके नष्ट होने पर शव का शृंगार आदि करके [illegible] नहीं है। [illegible] और उसका [illegible] प्रदर्शन करने वाले [illegible] इसके अतिरिक्त और किसी व्यक्ति का व्यक्तिगत स्मरण को महत्व दे कर उसका स्मारक बनाना आवश्यक नहीं है।

मैंने तो श्री [illegible] में अपना स्वयं का श्राद्ध कर रखा है जिससे मेरे पीछे किसी पर श्राद्धादि का बोझ न रहे।

ये अति थोड़े शब्द हैं। संघकार्य विचार के अर्थ सब समझ [illegible] पर अवलम्बित हैं। इति —

मा. स. गोळवलकर

॥ श्रीः ॥

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, केंद्र-नागपुर

सरसंघचालक : मा. स. गोळवलकर   सरकार्यवाह : म. द. देवरस

दूरभाष : ४२९०६
पत्रव्यवहारका पता
मा. स. गोळवल्कर
डा. हेडगेवार भवन
नागपुर २

पत्र क्र. ....   दिनांक 2-4-73   तिथि ....

परमप्रिय, आदरणीय स्वयंसेवक बंधुगण —

21 जून 1940 को परमपूजनीय डॉ. हेडगेवार जी का शरीर शान्त होने पर और उनकी इच्छा के अनुसार सरसंघचालक पद का गुरुभार मेरे ऊपर आया। मैं तो कुछ भी जानता नहीं था। तो भी सब पुराने कार्यकर्ताओं ने बड़े प्रेम से सहकार्य किया, मार्गदर्शन किया और इतने दीर्घ कालतक लगभग 33 वर्ष मैं इस काम को चलाता आया। अब भगवान की इच्छा दिखती है कि इसी योग्य व्यक्ति को यह दायित्व देकर कार्य अधिक अच्छे प्रकार और अधिक कुशलता से पूर्णता की ओर बढ़ावे। और अब यह योजना करती है।

इस दीर्घ कालमें मेरे स्वभावदोषोंके कारण यत्र तत्र सूचनाओंके, शब्दोंके कारण अपने अनेक कार्यकर्ताओंको मनोव्यथा हुआ होगा। मैं सबसे करबद्ध क्षमायाचना करता हूं। अपने श्री संत तुकाराम जी का वचन उद्धृत करता हूं जिससे सब भाव ध्यानमें आ सकेंगे। —

शेवटची विनवणी । संतजनीं परिसावी ॥
विसर तो न पडावा । माझा देवा तुम्हांसी ॥
आतां फार बोलों काई । अवघें पायीं विदित ॥
तुका म्हणे पडतों पायां । करा छाया कृपेची ॥ — ॥

मा. स. गोळवलकर